समृद्ध भारत न्यास

Samridh Bharat Nyas

Registered in the Court of Varanasi on dt. 08/11/2013, vide no. 214 & working since 2008

Head Office - 71 – Krishna Bagh, Nagwa Varanasi Mobile : + 91 – 9415 225324

Ref :SBN

दिनांक :

संक्रमण बिमारियों के रोकथाम के लिए कुम्भस्नान व कल्पवास के जीवनशैली का महत्व।

द्वारा : डॉ0 वाचस्पति त्रिपाठी

कुम्भ स्नान व कल्पवास का संक्षिप्त पौराणिक कथा

कुम्भ पर्व का महत्व अमृतत्व को प्राप्त करने के समान है और इसके कारण मनुष्य अमरत्व को प्राप्त करता है ऐसा ऋषि कहते हैं। भगवान विष्णु के कृपा से क्षीर सागर के मंथन से उत्पन्न अमृत कलश से भारत वर्ष में चार स्थलों पर अमृत का पतन हुआ, वह स्थान हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक है। इन चारों स्थानों पर निम्न विशेष काल में कुम्भ पर्व आयोजित होता है।

1. जब माद्य मास की आमवस्या के दिन मकर राशि में सूर्य और चन्द्र हो तथा वृष राशि में गुरू हों तो प्रयाग में कुम्भपर्व होता है।

2. जब मेष राशि में सूर्य और कुम्भ राशि में गुरू हों तब हरिद्वार में आमवस्या तिथि को उत्तम कुम्भ नामक योग होता है। हरिद्वार में यह योग वैशाख मास के अमावस्या को ही विशेष रूप से माना जाता है, क्योंकि उसी दिन सूर्य और चन्द्र मेष राशि में स्थित होते हैं तथा उसी समय कुम्भ राशि में गुरू का योग बनता है।

3. वैसाख माह में आमवस्या को सिंह राशि में बृहस्पति एवं मेष राशि में सूर्य तथा चन्द्रमा रहें तो उज्जैन में कुम्भपर्व होता है।

4. भाद्रपद मास की आमवस्या को सिंह राशि में सूर्य, चन्द्रमा तथा बृहस्पति के रहने पर नासिक में कुम्भपर्व होता है।

परिकल्पना की प्रथम अवधारणा

लेखक को कुम्भ स्नान कल्पवास के पौराणिक महत्व "अमरत्व प्राप्त" होने की बात ने विचार करने को विवश किया आखिर कौन सी बात है जो कुम्भ पर्व में अमृत

के समान है जिसे ग्रहण करने से अमरत्व प्राप्त होता है क्योंकि यह कथ्य आधुनिक मानव समाज के लिए अतिमहत्वपूर्ण व जिज्ञासा का विषय था। चूँकि लेखक स्वंय भैषज वैज्ञानिक हैं अतः कुम्भ पर्व का मानव जाति पर अमरत्व का भैषज गुण चिन्तन का विषय बन गया।

भैषज विज्ञान में वैक्सिन का प्रभाव अमृत जैसा ही बताया है जिसकी छोटी सी मात्रा का शरीर में बीजारोपण से मनुष्य किसी निश्चित संक्रमण व्याधि (जिसके लिए वैक्सिन लगाया जाता है) के लिए अमरत्व को प्राप्त करता है। वैक्सिन का यही अमृत गुण लेखक को कुम्भ पर्व में भी प्रतिविम्बित होने लगा और डॉ॰ वाचस्पति त्रिपाठी ने प्रथम अवधारणा बनाया कि कुम्भ स्नान के समय डुबकी लगाने से जल के माध्यम से, जल में उपस्थित नये व पुराने ज्ञात अज्ञात सुक्ष्म जिवाणुओं का शरीर में बिजारोपण होता है जिसके फलस्वरूप मनुष्य उन–उन सुक्ष्म जिवाणुओं के प्रति रोग प्रतिरोध क्षमता को अपने शरीर में व्याधिक्षमता के सिद्धान्त पर आधारित जैविक प्रणाली के कारण विकसित करता है। इस कुम्भ स्नान के कारण स्वतः भिन्न–भिन्न सुक्ष्म जिवाणुओं के लिए शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित होना ही कुम्भ पर्व के अमरत्व गुण को दर्शाता है जिसे सनातनी आचार–विचार में, पुराणों में ऋषि मुनियों द्वारा कहा गया है की कुम्भ स्नान कल्पवास करने वालों को, अमृत पान करने का लाभ मिलता है, अमरत्व प्राप्त होता है। इस आशय का पहला लेख डॉ॰ वाचस्पति त्रिपाठी द्वारा 31 जनवरी सन् 2007 को वाराणसी से प्रकाशित सान्ध्य दैनिक गाण्डिव पत्र में प्रकाशित किया गया था।[1]

संकल्पना का वैज्ञानिक आधार

(Fundamental Principle of Biological Pharmacy for Immunity)

भैषज विज्ञान में भिन्न भिन्न प्राकृतिक सन–साधन जैसे–मानव, जन्तु पौधा या सुक्ष्म जिवाणुओं से जो उत्पाद बनते है उन्हे बायोलॉजिकल प्रोडक्ट कहते है और इसके क्रिया के सिद्धान्तों को बायोलॉजिकल उत्पाद के मौलिक सिद्धान्त (Fundamental Principle of Biological Pharmacy) कहते है। इसमें वैक्सिन, रक्त, रक्त उत्पाद, एलेर्जेनिकस, ऊतक, कोशिका, जीन एन्टीबायोटिक, सिरम, ब्लड प्रोडक्ट ऊतक, इत्यादि होते है।

इन्ही बायोलॉजिकल प्रोडक्टस में वैक्सिन भी आते हैं जिसका प्रयोग संक्रमण बिमारियों के रोकथाम हेतु किया जाता है। मानव शरीर में संक्रमण बिमारियों से बचाव के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है जिसे व्याधि क्षमता या Immunity कहते हैं। वैसे तो

व्याधि क्षमता किसी जीव (Species) के लिए विशिष्ट हो सकती है प्रकृति से बचाव या सुरक्षा के लिए जाँति विशेष (Racial) हो सकती है या प्राकृतिक रूप से प्रत्येक व्यक्ति (Individual) में नैसर्गिक हो सकती है बिना बाहरी प्रेरक (Stimulus) के परन्तु यदि बचाव बाह्य प्रेरक (External Stimulus) या जीवाणु से होती है तो उसे एक्व्यार्ड इम्यूनिटी (Acquired Immunity) कहते है। एक्व्यार्ड इम्यूनिटी किसी विशेष जीवनशैली से हो सकती है या कृत्रिम (Artificially) भी हो सकती है। सीधे शब्दों में एक्व्यार्ड इम्यूनिटी (Acquired Immunity) जन्म लेने के बाद शरीर में बने एन्टीबॉडीज से होते हैं। अतः हम देखते है कि जन्म लेने के बाद शरीर में प्रवेश किए गए प्रत्येक जीवाणु (Antigen) के लिए शरीर द्वारा प्रतिरक्षा विज्ञान के जैव रासायनिक प्रक्रिया के कारण इम्यूनोग्लाब्यूलिन (Antibody) बनते है। इसी तत्व इम्यूनोग्लाब्यूलिन (Antibody) के कारण शरीर में व्याधि क्षमता (Acquired Immunity) होती है। यह जिवाणु (Antigen) प्राकृतिक रूप से और कृत्रिम रूप से जन्म लेने के बाद शरीर में प्रवेश कर सकते है।

कृत्रिम रूप से शरीर में दिए गए जीवाणु (Antigen) को वैक्सिन कहते हैं और जो जीवाणु (Antigen) प्राकृतिक जीवनशैली से शरीर में प्रवेश करते हैं उन्हें इस खोज के वैज्ञानिक ने "प्राकृतिक वैक्सिनेशन" का नाम दिया है जो कि इम्यूनिटी के मौलिक सिद्धान्तों पर पूर्ण आधारित है।

इम्यूनिटी के मौलिक सिद्धान्त को निम्न मानचित्र से समझा जाता है–

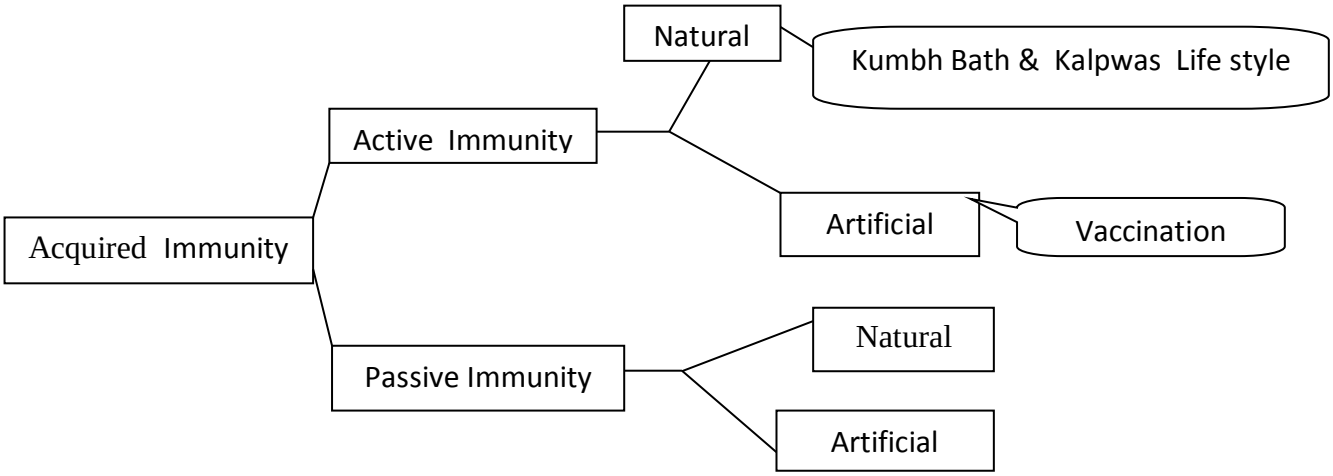

Principle of Biological Pharmacy for Immunity

संकल्पना को सिद्ध करने में सहयोगी संस्थाए

इस शोध में नेशनल बोटेनिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट लखनऊ, चिकित्सा विज्ञान संस्थान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, मोती लाल नेहरू मेडिकल कालेज इलाहाबाद, सामाजिक वानकीय संस्थान इलाहाबाद, प्रो॰ एस॰एन॰ त्रिपाठी मेमोरियल फाण्डेशन वाराणसी, इन हाउस आर एण्ड डी सूर्या फार्मास्यूटिकल्स एवं शंकर विमान मण्डपम् प्रमुख रहे हैं।

अवधारणा का सोपान

धीरे–धीरे कुम्भ पर्व के महत्व विषय को वैज्ञानिकों का एक बड़ा समुह समझने लगा और दिनांक 09–11 फरवरी 2007 को द्वितीय विश्व वेद ़विज्ञान सम्मेलन में Kumbha Snan At Sangam Scientific Basis of Indian Mythologies विषयक पत्रक प्रकाशित हुआ।(2)

दिनांक 07/03/2007 को कुम्भ स्नान कल्पवास के जीवनशैली को भैषज विज्ञान के Fundamental of Biological Pharmacy for Immunity से तुलना किया गया, और एक Theoretical Paper महामहिम राष्ट्रपति महोदय भारत सरकार को भी भेजा गया जिसका संज्ञान उन्होंने लिया।(3)

दिनांक 17/12/2007 को प्रसार भारती, आकाशवाणी द्वारा भी डॉ0 वाचस्पति त्रिपाठी का वार्ता विषयक "कुम्भ स्नान का वैज्ञानिक महत्व" प्रसारित किया गया।(4)

धीरे–धीरे कुम्भ पर्व के वैज्ञानिक महत्व को समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में जनहित में, समाचार पत्रों द्वारा छापा जाने लगा इसी कड़ी में निम्न प्रकाशित, वार्ता, लेख, समाचार पत्र, इन्टरव्यू प्रमुख रहे। दिनांक 16 मई 2011 को चेतना प्रवाह पत्रिका में प्रकाशित लेख विषय "कुम्भ स्नान परम्परा की वैज्ञानिकता" क्रम संख्या 15 पृष्ठ संख्या 49 द्वारा डॉ0 वाचस्पति त्रिपाठी हैं।(5)

दिनांक 04 जनवरी 2010 सोमवार को "Hindustan Times" English दैनिक समाचार पत्र द्वारा विषय "Kumbha Snan Provides immunity against antigens" पर डॉ॰ वाचस्पति त्रिपाठी का इन्टरव्यू प्रकाशित हुआ।(6)

दिनांक 01 फरवरी 2010 को चेतना प्रवाह पाक्षिक में पृष्ठ संख्या 10 पर "कुम्भ स्नान व कल्पवास की व्यवस्था अमृतपान जैसा" विषयक लेख डॉ॰ वाचस्पति त्रिपाठी का प्रकाशित हुआ।(7)

अनेकों लेख, समाचार, इन्टरव्यू के प्रकाशित होने के पश्चात् डॉ॰ वाचस्पति त्रिपाठी ने इस विषय को सिद्ध करने के लिए भारत के विभिन्न संस्थाओं को विभिन्न विषयों के चिकित्सक, वैज्ञानिक, समाजसेवियों, विशेषज्ञों से मिलकर के 2013 में प्रयाग इलाहाबाद में होने वाले महाकुम्भ के अवसर पर मिलकर के शोध करने का प्रस्ताव रखा इसके परिणाम स्वरूप चिकित्सा विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के निदेशक प्रो॰ डॉ॰ राना गोपाल सिंह के नेतृत्व में, नेशनल बाटेनिकल रिसर्च इन्स्टिट्यूट सी॰एस॰आई॰आर॰ लखनऊ के निदेशक प्रो॰ एस॰सी॰ नौटियाल के नेतृत्व में, स्वरूप रानी मेडिकल कालेज, इलाहाबाद के संकाय प्रमुख डॉ॰ प्रो॰ एस॰पी॰ सिंह के नेतृत्व में, सी॰एस॰एफ॰ई॰आर॰ एफ॰आई॰आर॰ इलाहाबाद के निदेशक डॉ॰ कुमुद दुबे के नेतृत्व में, प्रो0॰ एस॰एन॰ त्रिपाठी मेमोरियल फाउन्डेशन वाराणसी सूर्या फार्मास्युटिक्ल्स शोध एवं विकास केन्द्र के नेतृत्व में व शंकर विमान मंडपम् इलाहाबाद के सहयोग से कुल लगभग 31 वैज्ञानिकों के दल ने मिलकर के शोध करने का निर्णय लिया जिसका विषय कुम्भ स्नान व कल्पवास के जीवनशैली का वैज्ञानिक प्रमाणिकरण रहा।

शोध का विधि

2013 के महाकुम्भ में प्रत्येक प्रमुख स्नान पर संगम स्थल से जल के लगभग 765 नमूने लिये गये (Fig-1)

FIGURE-1

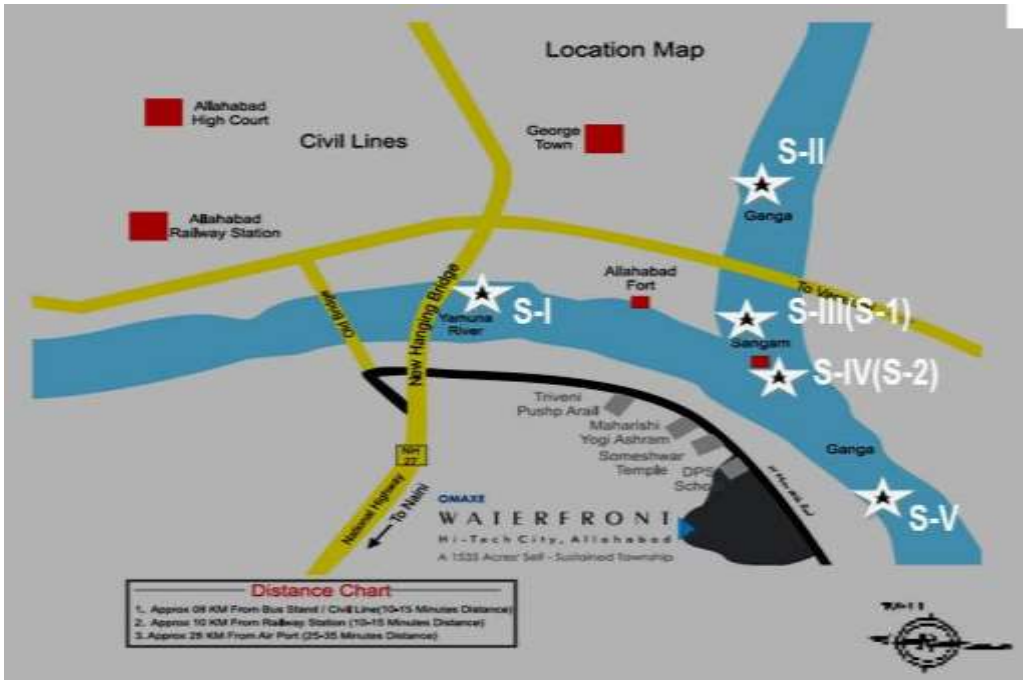

जिसके सुक्ष्म जिवाणुओं का अध्ययन एवं फिजियों केमिकल्स टेस्ट किए गए

(Table-1)**: Microbial population depicting overall effect of mass ritualistic bathing on different sites and events i.e. Pre-Kumbh (A), Makar Sankranti (B), Paush Purnima (C),**

	Heterogeneous	Pseudomonas	Coliforms	Fungi	Salmonella
	Log_{10} CFU/ml				
YC					
A	4.70±0.03	4.14±0.08	1.86±0.05	1.65±0.09	1.84±0.04
B	5.11±0.01	3.86±0.02	1.68±0.14	1.42±0.06	2.37±0.06
C	5.12±0.02	4.86±0.08	1.82±0.06	1.86±0.02	2.58±0.05
GC					
A	4.75±0.02	3.90±0.03	1.68±0.10	1.56±0.04	1.79±0.06
B	4.95±0.01	3.79±0.17	2.01±0.14	1.46±0.09	2.07±0.05
C	4.99±0.04	4.59±0.03	1.46±0.09	1.54±0.16	2.39±0.01
SI					
A	4.63±0.05	3.68±0.19	1.46±0.09	1.46±0.09	1.46±0.09
B	5.15±0.01	3.95±0.06	1.79±0.06	1.59±0.15	1.90±0.03
C	5.01±0.02	4.60±0.02	2.28±0.05	1.26±0.14	2.70±0.01
SII					
A	4.74±0.03	3.99±0.05	1.75±0.05	1.42±0.06	1.63±0.03
B	5.15±0.03	3.93±0.05	1.83±0.07	1.30±0.00	2.16±0.09
C	5.09±0.01	4.83±0.02	2.28±0.05	1.32±0.16	2.21±0.02
AS					
A	4.82±0.01	3.92±0.05	1.88±0.04	1.56±0.04	1.84±0.04
B	5.24±0.03	3.94±0.03	2.29±0.05	1.36±0.06	2.10±0.02
C	5.24±0.02	4.37±0.02	2.18±0.02	1.59±0.15	2.68±0.03

Impact of mass bathing on BOD (mg l^{-1}) of Kumbh water at Allahabad.

Sites	BOD (mg l^{-1})			COD (mg l^{-1})		
	Pre-Kumbh	Makar Sankranti	Paush Purnima	Pre-Kumbh	Makar Sankranti	Paush Purnima
YC	2.16±0.26	2.10±0.27	2.24±0.34	11.65±1.87	12.21±1.67	12.95±1.78
GC	4.89±0.12	5.78±0.81	6.19±0.62	26.50±1.21	32.80±0.81	35.40±1.21
S-1	5.57±0.37	6.19±0.36	6.86±1.03	31.50±1.38	35.60±2.37	40.30±2.36
S-2	5.45±0.26	7.53±0.45	7.95±0.32	32.50±3.27	42.80±4.46	47.50±2.29
AS	4.19±0.40	5.04±0.14	5.20±0.16	25.60±2.41	31.60±2.84	29.60±3.16

Level of different heavy metals at S-1 site at different time points of kumbh bath

	Cadmium (µg l^{-1})	Lead (µg l^{-1})	Arsenic (µg l^{-1})
Pre-Kumbh	1.04±0.06	1.91±0.34	7.97±0.61
Makar Sankranti	2.20±0.10	0.31±0.21	13.38±0.28
Paush Purnima	2.81±0.06	0.33±0.04	7.64±0.28
Mauni Amawasya	BDL	BDL	8.11±0.90
Basant Panchami	BDL	BDL	6.77±0.90
Magh Purnima	BDL	BDL	6.59±0.36
Mahashivratri	BDL	BDL	7.44±0.31
Post Kumbh II	0.74±0.06	2.18±0.57	10.86±0.44

कल्पवास करने वाले एक हजार कल्पवासियों के स्वास्थ्य व रक्त का परिक्षण किया गया।

(Table-2): **Biochemical parameters of random samples collected during 30 days stay of kalpwasi.**

S.N	Parameters	Mean ± SD, (n)
1	HB	12.082±1.4015, (480)
2	Platelets (10^3)	234.97±72.68, (480)
3	Lymphocytes (10^3)	2.084±0.62, (480)
4	Granulocytes (10^3)	4.88417±1.29, (480)
5	SGOT	28.49±17.16, (85)
6	ALP	92.948±39.38, (85)
7	Urea	25.0780±11.17, (85)
8	Creatinine	0.3014±.13, (85)
9	IgG	1312·9±189.05, (209)
10	IgM	102·18±41.31, (209)
11	IgA	228.92±68.21, (209)

SN	Immunoglobulins	Mean=- SD (n)
1	IgG	1312·9±189.05, (209)
2	IgM	102·18±41.31, (209)
3	IgA	228.92±68.21, (209)

पहले स्नान से अन्तिम स्नान के बीच के लिये गए जल के नमूने एवं कल्पवासियों के खून के नमूनों की जाँच की गयी। कल्पवासियों के विभिन्न जाँचों मे किडनी Function Test, Liver Function Test, CBS, Typhoid Tytre, रक्तचाप व इम्यूनोग्लोब्युलिन का जाँच हुआ। जल के नमूनों में अनेंको प्राकृतिक सुक्ष्म जिवाणु पाये गये वही रक्त इम्यूनोग्लोब्युलिन के बढ़ने का Trend देखा गया व किसी भी कल्पवासी को कोई भी बिमारी संक्रमण बिमारी नही हुई न ही 2013 में कोई महामारी फैली।

अन्तर्राष्ट्रीय वेद विज्ञान सम्मेलन में शोध की प्रस्तुति

इस शोध के आधार पर विषय "संक्रमण बिमारियों के रोकथाम के लिए कुम्भ स्नान व कल्पवास के जिवनशैली महत्वपूर्ण" के अन्तर्गत तृतीय विश्व वेद विज्ञान सम्मेलन मे जनवरी 10–13, 2018 को शोध पत्र पढ़ा गया। [8]

इस पूरे अध्ययन में कुम्भ पर्व के दौरान जलो के भौतिक रसायनिक गुणों और सुक्ष्म जिवाणुओं का अध्ययन किया गया और मनुष्य के स्वास्थ्य परिक्षण, रक्त परिक्षण के॰एफ॰टी॰ एल॰एफ॰टी॰ इम्यून इन्डिकेटर्स की जाँच किया गया। शोध के दौरान 1000 कल्पवासियों में से किसी का भी स्वास्थ्य खराब नही हुआ, पेट में खराबी नहीं हुई, डब्लू॰बी॰सी॰ स्थिर था। इम्यून परिक्षण (Immunological Test) में बढ़ोत्तरी पाई गई आई॰जी॰ए॰ (IgA) आई॰जी॰एम॰ (IgM) बढ़ा, के॰एफ॰टी॰ एल॰एफ॰टी॰ भी नार्मल पाया गया। टाइफाइड टाइटर बढ़ा पाया गया जो टाइफॉइड बिमारी के प्रति, बढ़ी क्षमता बताता है। कोई भी महामारी या संक्रमण बिमारी नही हुआ।

शोध का परिणाम

2013 के महाकुम्भ पर्व के समय करोड़ों लोगों के स्नान करने वाले कल्पवासियों का सामुहिक संगम में स्नान से प्राकृतिक इनॉकुलेशन होता है जिसके परिणाम स्वरूप व्याधिक्षमता में वृद्धि हुआ परन्तु किसी भी कल्पवासी को महामारी या संक्रमण बिमारी, कोई भी व्याधि नहीं पाई गई, इम्यूनिटी इन्डिकेटर्स बड़ा, जो सिद्ध करता है कि कुम्भ स्नान कल्पवास की जीवनशैली नेचुरल एक्टिव एक्वायर्ड इम्यूनिटी के मौलिक सिद्धान्त पर कार्य करती है और स्नान करने वाले कल्पवासी की व्याधि क्षमता (Immunity) बढ़ाती है।

शोध के बाद

शोध के बाद कुम्भ स्नान, कल्पवास और गंगा के महत्वपूर्ण खोज को लेकर अनेको लेख व समाचार प्रकारशित हुए जिनमें निम्न प्रमुख रहे। गंगा स्नान से बढ़ती है "रोग प्रतिरोधक क्षमता" विषयक लेख प्रकाशित हुआा। भागीरथी के स्वर नामक पत्रिका के 19 अगस्त 2015 के अंक में।[9]

"कल्याण" पत्रिका में, अप्रैल 2014 को पृष्ठ सं0 28 पर "प्रयाग संगम स्नान का चिकित्सकीय महत्व" विषय लेख प्रकाशित हुआ।[10]

कुम्भ स्नान कल्पवास पर्व को जैसा कि वेदों पुराणों व ऋषि मुनियां ने कहा है वही परिणाम आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा भी शोध करने के उपरान्त पाया गया। लेखक के दृष्टी से कुम्भ स्नान पर्व को यदि प्राकृतिक सार्वभौम टिकाकरण"(Natural Universal Vaccination) की संज्ञा दिया जाए तो अतिशयोक्ती नही होगी जो भारतीय दर्शन के क्षेत्र प्रधानवाद सिद्धान्त पर आधारित है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) की डायरेक्टर जनरल डॉ0 मार्गरट चान ने कहा है कि पास्ट एंटीबायोटिक एरा आने वाला है, जब किसी की एक छोटी सी चोट भी जानलेवा हो जायेगी। लेनसेट में छपे एक खबर के अनुसार Secound line defensive Drug for T.B. management भी कार्य नहीं कर पा रही है और अब टी॰बी॰ के टोटल ड्रग रेजीसटेंस (TDR) के मरीज भी मिलने लगे हैं। इन सभी का मूल कारण है सूक्ष्म जिवाणुओं में रोगाणुरोधी प्रतिरोध (Anti microbial Resistance-AMR) का पैदा होना और बढ़ना है। आज डेंगु, चिकनगुनिया, स्वाइन फ्लू, बर्ड फ्लू, टी॰बी॰, दिमागी ज्वर आदि सुपरबग, ई0कोलाई व अन्य रोगाणुरोधी प्रतिरोध बैक्टिरिया जनित व्याधियां इसी समस्या की देन हैं।

डॉ॰ त्रिपाठी कहते हैं कि इस विषय पर भारत के वैज्ञानिकों को, वैज्ञानिक संस्थाओं को मिलकर के शोध करना चाहिए जिसके परिणाम विश्व को चौकाने वाले तो होंगे ही और भारत पुनः विश्वगुरू बनेगा।

धन्यवाद

भवदीय,

डॉ0 वाचस्पति त्रिपाठी
प्रधान न्यासी **मो0 9415225324**
बी फार्मा (आनर्स), एम फार्मा आई0आई0टी0 (बी.एच.यू.), पी0एच0डी0 आयुर्वेद
एस.आर.एफ. (यूजीसी) मेडिसिनल केमेस्ट्री एवं फार्माकोलाजी
चि0वि0सं0 काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
मुख्यालय पताः–''सुरेन्द्रम'' एन0 1/69 बी0
71 कृष्णा बाग, नंगवा वाराणसी

Glimpses of Research Conducted on Kumbh Snan & Kalpvas During Kumbh Parv Held At Prayag Allahabad In 2013.

SCIENTIFIC VALIDATION OF LIFE STYLE DURING
KUMBHA BATH AND

KUMBHA BATH AND KALPWAS
COLLABORATIONS